REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2026

# बिलासपुर में युवाओं के बीच स्टार्टअप एवं उद्यमिता के प्रति जागरूकता और अवसरों का अध्ययन

रंजीता वर्मा
(अथिति व्याख्याता वाणिज्य विभाग)
शा. एम. एम. आर. पी. जी. महाविद्यालय, चाम्पा, जिला-जांजगीर चाम्पा.

**सारांश:**

भारत में पिछले एक दशक में स्टार्टअप और उद्यमिता आर्थिक विकास, नवाचार, स्वरोजगार तथा रोजगार-सृजन के महत्वपूर्ण साधन बनकर उभरे हैं।31 मार्च 2026 तक देश में उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की संख्या 2.23 लाख से अधिक हो चुकी थी और इनसे 23.36 लाख से अधिक प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने की सूचना दी गई है। इससे स्पष्ट है कि युवाओं के लिए परंपरागत नौकरी के अतिरिक्त उद्यमिता एक महत्वपूर्ण आजीविका विकल्प के रूप में विकसित हो रही है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में युवाओं के बीच स्टार्टअप एवं उद्यमिता के प्रति उपलब्ध जागरूकता-परिवेश और अवसरों का द्वितीयक आँकड़ों के आधार पर विश्लेषण करना है। अध्ययन में जिला प्रशासन बिलासपुर, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग, स्टार्टअप इंडिया, छत्तीसगढ़ शासन, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण तथा नीति आयोग के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। बिलासपुर जिले की जनसंख्या16,28,202, शहरी जनसंख्या 35.81 प्रतिशत, साक्षरता 74.46 प्रतिशत तथा कार्य-भागीदारी दर 42.34 प्रतिशत दर्ज की गई है। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के ऊष्मायन केंद्र द्वारा56 स्टार्टअप को भौतिक अथवा आभासी माध्यम से ऊष्मायित किया जा चुका है और उसके निधि-समावेशी प्रौद्योगिकी व्यवसाय ऊष्मायन केंद्र की परियोजना लागत लगभग ₹4.69 करोड़ है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि बिलासपुर में उद्यमिता के लिए संस्थागत आधार विकसित हो रहा है और राज्य की नई स्टार्टअप नीतिवित्तपोषण, ऋण, किराया, पेटेंट, पूंजी निवेश और रोजगार के लिए अनेक सहायता उपलब्ध कराती है। किंतु बिलासपुर के युवाओं के बीच वास्तविक जागरूकता का प्रत्यक्ष प्रतिशत बताने वाला सार्वजनिक जिला-स्तरीय सर्वेक्षण उपलब्ध नहीं है। इसलिए जागरूकता का अध्ययन ऊष्मायन, नीति-सहायता, नवाचार क्षमता, स्टार्टअप वृद्धि और संस्थागत उपलब्धता जैसे अप्रत्यक्ष संकेतकों के आधार पर किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि बिलासपुर में अवसर पर्याप्त रूप से बढ़े हैं परंतु व्यापक जागरूकता, प्रारंभिक पूंजी, बाजार संपर्क, मार्गदर्शन और महाविद्यालय-स्तरीय उद्यमिता प्रशिक्षण को और मजबूत करने की आवश्यकता है।

**मुख्य शब्द:** *युवा उद्यमिता, स्टार्टअप, बिलासपुर, नवाचार, स्वरोजगार, ऊष्मायन केंद्र, उद्यमिता जागरूकता, छत्तीसगढ़।*

## प्रस्तावना:

आर्थिक विकास के आधुनिक स्वरूप में उद्यमिता केवल व्यवसाय स्थापना तक सीमित नहीं रही है। यह नवाचार, तकनीकी परिवर्तन, स्थानीय समस्याओं के समाधान, उत्पादक रोजगार और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया बन चुकी है। विशेष रूप से युवाओं के लिए स्टार्टअप संस्कृति ने ऐसा मार्ग प्रस्तुत किया है जिसमें व्यक्ति नौकरी खोजने वाले के स्थान पर रोजगार उत्पन्न करने वाला बन सकता है।

भारत सरकार ने 16 जनवरी 2016 को स्टार्टअप इंडिया पहल आरंभ की। इसके कार्ययोजना के तीन प्रमुख आधार (सरलीकरण एवं मार्गदर्शन, वित्तीय सहायता एवं प्रोत्साहन तथा उद्योग-अकादमिक सहभागिता एवं ऊष्मायन) रखे गए। इसके पश्चात भारत में स्टार्टअप गतिविधियों में तीव्र वृद्धि हुई। 31 मार्च 2026 तक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की संख्या 2.23 लाख से अधिक तथा इनके द्वारा उत्पन्न प्रत्यक्ष

रोजगार 23.36 लाख से अधिक हो गए। इसी समय लगभग 48 प्रतिशत मान्यता प्राप्त स्टार्टअप में कम-से-कम एक महिला निदेशक अथवा भागीदार था।

छत्तीसगढ़ भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं है। जून 2024 तक राज्य में 1,517 उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग से मान्यता प्राप्त स्टार्टअप दर्ज किए गए थे। 2020 में राज्य में 155 नए स्टार्टअप मान्यता प्राप्त हुए थे, जबकि 2024 में यह संख्या बढ़कर 460 हो गई। इस प्रकार वार्षिक मान्यताओं में चार वर्षों में लगभग 196.8 प्रतिशत वृद्धि हुई।

बिलासपुर राज्य का एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक, व्यापारिक, प्रशासनिक तथा औद्योगिक केंद्र है। जिले की शहरी जनसंख्या 35.81 प्रतिशत तथा साक्षरता दर 74.46 प्रतिशत है। यहाँ गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय सहित उच्च शिक्षा संस्थानों, औद्योगिक क्षेत्रों, व्यापारिक गतिविधियों और सेवा क्षेत्र की उपस्थिति युवाओं में नवउद्यमिता विकसित करने के लिए आधार प्रदान करती है।

इस विषय का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि छत्तीसगढ़ में 2025 के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार 15–29 आयु वर्ग में बेरोजगारी दर सामान्य स्थिति के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र में 4.7 प्रतिशत, शहरी क्षेत्र में 13.7 प्रतिशत और संयुक्त रूप से 6.1 प्रतिशत थी। अर्थात शहरी युवा बेरोजगारी ग्रामीण बेरोजगारी से 9 प्रतिशत-बिंदु अधिक थी। बिलासपुर जैसे शहरीकरण वाले जिले में उद्यमिता और स्वरोजगार इसलिए रोजगार नीति के पूरक साधन बन सकते हैं।

## शोध के उद्देश्य

1) बिलासपुर में युवाओं के लिए उपलब्ध स्टार्टअप एवं उद्यमिता परिवेश का अध्ययन करना।
2) युवाओं में उद्यमिता जागरूकता को प्रभावित करने वाले शैक्षणिक और संस्थागत कारकों का विश्लेषण करना।
3) बिलासपुर तथा छत्तीसगढ़ में स्टार्टअप वृद्धि और नवाचार के उपलब्ध द्वितीयक आँकड़ों का अध्ययन करना।
4) राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध वित्तीय, ऊष्मायन, ऋण, पेटेंट एवं रोजगार प्रोत्साहनों का विश्लेषण करना।
5) बिलासपुर की स्थानीय आर्थिक संरचना के अनुरूप युवाओं के लिए संभावित उद्यमिता क्षेत्रों की पहचान करना।
6) युवा उद्यमिता के मार्ग में वित्त, बाजार, मार्गदर्शन तथा जागरूकता संबंधी कमियों को पहचानना।

## शोध की परिकल्पनाएँ

- **वैकल्पिक परिकल्पना 1:** बिलासपुर एवं उसके राज्य-स्तरीय परिवेश में युवाओं के लिए स्टार्टअप एवं उद्यमिता के अवसरों में समय के साथ उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- **शून्य परिकल्पना 1:** युवाओं के लिए स्टार्टअप एवं उद्यमिता के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि के पर्याप्त द्वितीयक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।
- **वैकल्पिक परिकल्पना 2:** शैक्षणिक संस्थानों, ऊष्मायन सुविधाओं और सरकारी सहायता तंत्र की उपलब्धता युवाओं में उद्यमिता जागरूकता के विकास के लिए सकारात्मक संस्थागत आधार प्रदान करती है।
- **शून्य परिकल्पना 2:** उपलब्ध संस्थागत एवं नीति-सहायता युवाओं में उद्यमिता जागरूकता के विकास के लिए पर्याप्त आधार प्रदान नहीं करती।

## साहित्य समीक्षा

अजज़ेन (1991) के नियोजित व्यवहार सिद्धांत के अनुसार किसी व्यवहार को अपनाने की इच्छा व्यक्ति के दृष्टिकोण, सामाजिक मानदंड और स्वयं द्वारा अनुभव किए गए व्यवहारिक नियंत्रण से प्रभावित होती है। अतः युवा तभी उद्यमिता की ओर बढ़ता है जब उसे व्यवसाय स्थापना आकर्षक, सामाजिक रूप से स्वीकार्य और व्यावहारिक रूप से संभव दिखाई देती है। क्रूगर, रीली और कार्सरुड (2000) ने उद्यमिता को मुख्यतः एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया माना। उनके अनुसार व्यवसाय प्रारंभ करने से पहले व्यक्ति अवसर की पहचान करता है, उसकी व्यवहार्यता का मूल्यांकन करता है और उद्यमिता की स्पष्ट इच्छा विकसित करता है। चेन, ग्रीन और क्रिक (1998) ने उद्यमी आत्म-प्रभाविता को महत्वपूर्ण कारक बताया। व्यक्ति को विपणन, नवाचार, प्रबंधन, जोखिम वहन और वित्तीय नियंत्रण के संबंध में अपनी क्षमता पर जितना अधिक विश्वास होगा, उद्यमिता अपनाने की संभावना उतनी बढ़ सकती है।

लिनान और चेन (2009) ने 519 व्यक्तियों पर आधारित अध्ययन में उद्यमिता अभिप्राय मापन की एक संरचना विकसित की। अध्ययन ने यह पुष्टि की कि दृष्टिकोण, सामाजिक मान्यता तथा अनुभवित व्यवहारिक नियंत्रण उद्यमिता अभिप्राय को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। वॉन ग्रेवनिट्ज़, हारहॉफ और वेबर (2010) ने स्पष्ट किया कि उद्यमिता शिक्षा का उद्देश्य केवल अधिक संख्या में छात्रों को व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करना नहीं है; यह युवाओं को स्वयं की उद्यमी क्षमता पहचानने में भी सहायता करती है। उनके अध्ययन में पाठ्यक्रम ने छात्रों के स्वयं-मूल्यांकित उद्यमिता कौशलों पर सकारात्मक प्रभाव दिखाया। बे, कियान, मियाओ और फिएट (2014) ने 73 अध्ययनों और 37,285 प्रतिभागियों के परिणामों का समेकित विश्लेषण किया। उद्यमिता शिक्षा तथा उद्यमिता अभिप्राय के बीच सकारात्मक किंतु अपेक्षाकृत छोटा संबंध पाया गया। इससे यह स्पष्ट होताहै कि केवल कक्षा-आधारित शिक्षा पर्याप्त नहीं होती; व्यावहारिक प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, पूंजी तथा अवसर-संपर्क भी आवश्यक हैं।नबी और सहयोगियों (2017) ने 2004–2016 के बीच प्रकाशित 159 अध्ययनों की व्यवस्थित समीक्षा की। उन्होंने पाया कि उद्यमिता शिक्षा संबंधी अधिकांश अध्ययन अल्पकालीन अभिप्राय और दृष्टिकोण पर केंद्रितथे, जबकि वास्तविक व्यवसाय स्थापना और दीर्घकालीन परिणामों का अध्ययन सीमित था।

भारतीय संदर्भ में हसन, सलीम, अनवर और हुसैन (2020) ने 334 भारतीय विश्वविद्यालय छात्रों पर किए अध्ययन में पाया कि अवसर पहचान और उद्यमी आत्म-प्रभाविता दोनों का उद्यमिता अभिप्राय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उद्यमिता शिक्षा ने आत्म-प्रभाविता और उद्यमिता अभिप्राय के संबंध को भी मजबूत किया।

इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि युवाओं की जागरूकता को केवल‘स्टार्टअप शब्द की जानकारी” से नहीं मापा जाना चाहिए। इसमें अवसर पहचान, प्रशिक्षण, वित्तीय जानकारी, सफल उद्यमियों से संपर्क, ऊष्मायन, मार्गदर्शन और स्वयं पर विश्वास शामिल हैं। यही अवधारणा प्रस्तुत अध्ययन के सैद्धांतिक आधार का निर्माण करती है।

## शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का द्वितीयक आँकड़ा-आधारित अध्ययन है। इसमें कोई प्राथमिक प्रश्नावली सर्वेक्षण नहीं किया गया है। विश्लेषण के लिए 2011 से 2026 तक उपलब्ध नवीनतम प्रामाणिक सूचनाओं काउपयोग किया गया है, यद्यपि अलग-अलग संकेतकों के संदर्भ वर्ष अलग हैं।प्रमुख स्रोतों में जिला प्रशासन बिलासपुर, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, विकास आयुक्त–सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, स्टार्टअप इंडिया, उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग, छत्तीसगढ़ शासन का वाणिज्य एवं उद्योग विभाग, नीति आयोग तथा आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण शामिल हैं। अध्ययन में प्रतिशत परिवर्तन, प्रवृत्ति तुलना, क्षेत्रीय संरचना, नीति-विश्लेषण तथा प्रमाण-त्रिकोणीकरण की विधि अपनाई गई है। जहाँ आवश्यक हुआ, उपलब्ध सरकारी मूल आँकड़ों से प्रतिशत की गणना लेखक द्वारा की गई है। एक महत्वपूर्ण सीमा यह है कि“बिलासपुर के कितने प्रतिशत युवा स्टार्टअप योजनाओं से परिचित हैंइस प्रश्न का उत्तर देने वाला कोई अद्यतन सार्वजनिक जिला-स्तरीय सर्वेक्षण उपलब्ध नहीं मिला। इसलिए अध्ययन में जागरूकता का प्रत्यक्ष प्रतिशत गढ़ने के स्थान पर ऊष्मायन क्षमता, राज्य की पारिस्थितिकी क्षमता, स्टार्टअप वृद्धि, उच्च शिक्षा, नीति-सहायता तथा नवाचार संकेतकों को जागरूकता के अप्रत्यक्ष संकेतक के रूप में ग्रहण किया गया है।

## सैद्धांतिक रूपरेखा

अध्ययन की सैद्धांतिक रूपरेखा चार परस्पर जुड़े स्तरों (जागरूकता, उद्यमिता अभिप्राय, उपलब्ध संसाधन और वास्तविक उद्यम स्थापना) पर आधारित है। प्रथम स्तर पर युवाओं को स्टार्टअप, बाजार अवसरों, सरकारी योजनाओं, वित्तीय सहायता तथा सफल उद्यमियों के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है, जो उनके दृष्टिकोण, जोखिम लेने की इच्छा तथा आत्म-प्रभाविता को प्रभावित करती है। इसके बाद ऊष्मायन केंद्र, मार्गदर्शक, तकनीकी सहायता, ऋण, बीज-निधि, बाजार तथा बौद्धिक संपदा संबंधी सहायता जैसे संसाधनों की उपलब्धता युवाओं को अपने विचारों को व्यावसायिक रूप देने में सहायता करती है।इन सभी कारकों का समन्वय अंततः व्यवसाय स्थापना अथवा स्टार्टअप निर्माण की दिशा में कार्य करता है। अजज़ेन का नियोजित व्यवहार सिद्धांत तथा क्रूगर और सहयोगियों का उद्यमित अभिप्राय दृष्टिकोण इस प्रक्रिया के मनोवैज्ञानिक पक्ष को स्पष्ट करते हैं, जबकि स्थानीय स्तर पर विश्वविद्यालय, ऊष्मायन केंद्र, सरकारी नीति-सहायता, उद्योग तथा वित्तीय संस्थानों की उपलब्धता उद्यमिता के विकास के लिए अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों का निर्माण करती है।

## आँकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थनिर्वचन

**तालिका 1 : बिलासपुर का सामाजिक-आर्थिक एवं उद्यमिता आधार**

| संकेतक | आँकड़ा | संदर्भ |
|---|---|---|
| कुल जनसंख्या | 16,28,202 | जनगणना 2011 |
| शहरी जनसंख्या | 5,82,146 | |
| शहरी जनसंख्या का अनुपात | 35.81% | |
| साक्षरता दर | 74.46% | |
| कार्य-भागीदारी दर | 42.34% | |
| ऐतिहासिक पंजीकृत औद्योगिक इकाइयाँ | 19,068 | जिला औद्योगिक प्रोफाइल |
| लघु उद्योगों में अनुमानित रोजगार | 45,642 | जिला औद्योगिक प्रोफाइल |
| गुरु घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा ऊष्मायित स्टार्टअप | 56 | वर्तमान विश्वविद्यालय सूचना |
| निधि-समावेशी प्रौद्योगिकी व्यवसाय ऊष्मायन परियोजना लागत | लगभग ₹4.69 करोड़ | वर्तमान विश्वविद्यालय सूचना |

***स्रोत:*** *जिला प्रशासन बिलासपुर; विकास आयुक्त, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम; गुरु घासीदास विश्वविद्यालय।*

तालिका से स्पष्ट है कि बिलासपुर में शिक्षा शहरी बाजार और औद्योगिक अनुभव का मिश्रित आधार मौजूद है। विशेष महत्व का तथ्य 56 स्टार्टअप का स्थानीय विश्वविद्यालय के माध्यम से ऊष्मायन है। इसका अर्थ यह नहीं कि सभी स्टार्टअप केवल बिलासपुर के युवाओं द्वारा संचालित हैंपरंतु यह जिले में वास्तविक स्टार्टअप सहायता अवसंरचना की उपलब्धता का स्पष्ट प्रमाण है।

**तालिका 2 : छत्तीसगढ़ में वर्षवार नए मान्यता प्राप्त स्टार्टअप**

| वर्ष | नए मान्यता प्राप्त स्टार्टअप |
|---|---|
| 2020 | 155 |
| 2021 | 167 |
| 2022 | 237 |
| 2023 | 362 |
| 2024 | 460 |

2020 से 2024 के बीच वार्षिक मान्यता 155 से 460, अर्थात लगभग 196.8 प्रतिशत बढ़ी। इसकी अनुमानित चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर लगभग 31.3 प्रतिशत बैठती है। 2020–2024 के पाँच वर्षों में कुल 1,381 नए स्टार्टअप मान्यता प्राप्त हुए। गणना मूल सरकारी आँकड़ों पर आधारित है। यह प्रवृत्ति बताती है कि राज्य-स्तर पर उद्यमिता गतिविधि केवल नीति घोषणा तक सीमित नहीं है, बल्कि नए उद्यमों के औपचारिक पंजीकरण में भी वृद्धि हुई है।

**तालिका 3 : रोजगार, नवाचार और स्टार्टअप पारिस्थितिकी के संकेतक**

| संकेतक | परिणाम |
|---|---|
| छत्तीसगढ़, 15–29 वर्ष युवा बेरोजगारी—ग्रामीण | 4.7% |
| युवा बेरोजगारी—शहरी | 13.7% |
| युवा बेरोजगारी—कुल | 6.1% |
| भारत नवाचार सूचकांक2021 में छत्तीसगढ़ का अंक | 10.97 |
| प्रमुख राज्यों में स्थान | 17वाँ |
| स्टार्टअप पारिस्थितिकी क्रमांकन 5.0 | उभरता स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र |
| अवसंरचना सहायता—प्रतिशतक | 21 |

| | |
|---|---|
| संस्थागत सहायता—प्रतिशतक | 20 |
| वित्तपोषण अवसर—प्रतिशतक | 17 |
| बाजार पहुँच—प्रतिशतक | 20 |
| पारिस्थितिकी क्षमता निर्माण—प्रतिशतक | 56 |
| नवाचार एवं स्थिरता—प्रतिशतक | 83 |

***स्रोत:*** *आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2025; नीति आयोग; उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग।*

इन आँकड़ों की व्याख्या अत्यंत महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ कानवाचार एवं स्थिरता प्रतिशतक 83 तथा क्षमता निर्माण 56 है, जिससे सकारात्मक संभावनाएँ दिखाई देती हैं। इसके विपरीत वित्तपोषण अवसर17, बाजार पहुँच 20, संस्थागत सहायता 20 और अवसंरचना सहायता 21 प्रतिशतक पर हैं। इसलिए राज्य में नवीन विचारों की क्षमता मौजूद है लेकिन उन्हें व्यवसाय में बदलने के लिए पूंजी, बाजार और संस्थागत संपर्क को और मजबूत करने की आवश्यकता है।

**तालिका 4 : युवाओं के लिए छत्तीसगढ़ की प्रमुख स्टार्टअप सहायता**

| **सहायता** | **उपलब्ध प्रावधान** |
|---|---|
| अवधारणा से न्यूनतम व्यवहार्य उत्पाद हेतु सहायत | पात्र श्रेणियों के लिए ₹10 लाख तक |
| स्टार्टअप पूंजी कोष | प्रारंभिक ₹100 करोड़ कोष |
| वैकल्पिक निवेश कोष के साथ सह-निवेश | ₹50 करोड़ तक मिलान व्यवस्था |
| ऋण जोखिम कोष | ₹50 करोड़ |
| प्रतिभूति-रहित ऋण | ₹1 करोड़ तक |
| ब्याज अनुदान | ₹50 लाख तक के ऋण पर, अधिकतम 10% ब्याज की 100% सहायता, पाँच वर्ष |
| कार्यस्थल किराया | 50%, अधिकतम ₹15,000 प्रति माह, तीन वर्ष |
| स्थिर पूंजी निवेश सहायता | अधिकतम 35%, सीमा ₹35 लाख |
| राष्ट्रीय पेटेंट व्यय सहायता | 75%, अधिकतम ₹10 लाख |
| अंतरराष्ट्रीय पेटेंट सहायता | 75%, अधिकतम ₹20 लाख |
| रोजगार सहायता | पात्र स्थिति में महिला कर्मचारी ₹6,000 तथा पुरुष कर्मचारी ₹5,000 प्रतिमाह तक |

***स्रोत:*** *छत्तीसगढ़ वाणिज्य एवं उद्योग विभाग, स्टार्टअप छत्तीसगढ़।*

यह नीति संरचना बिलासपुर के युवाओं के लिए अवसरों का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। यदि किसी छात्र या युवा उद्यमी को विचार, उत्पाद, तकनीक अथवा सेवा मॉडल विकसित करना है तो समस्या केवल धन की नहीं रह जाती; ऊष्मायन, किराया, ऋण, ब्याज, पेटेंट और रोजगार तक के लिए सहायता का ढाँचा उपलब्ध है। चुनौती इस सहायता को अंतिम लाभार्थी तक पहुँचाने की है।

**तालिका 5 : बिलासपुर की ऐतिहासिक सूक्ष्म एवं लघु उद्योग संरचना**

| **गतिविधि** | **इकाइयाँ** | **कुल 19,068 में अनुमानित हिस्सा** |
|---|---|---|
| मरम्मत एवं सेवा | 5,681 | 29.8% |
| अन्य गतिविधियाँ | 4,470 | 23.4% |
| तैयार वस्त्र एवं कढ़ाई | 2,699 | 14.2% |
| लकड़ी एवं फर्नीचर | 2,011 | 10.5% |
| कृषि आधारित उद्योग | 1,520 | 8.0% |
| चमड़ा आधारित | 1,145 | 6.0% |
| खनिज आधारित | 991 | 5.2% |

***नोट:*** *ये वर्तमान इकाई-संख्या नहीं हैं; ये जिला औद्योगिक स्थिति में उपलब्ध ऐतिहासिक संरचनात्मक आधार हैं और इन्हें केवल स्थानीय व्यवसाय संरचना को समझने के लिए उपयोग किया गया है।*

स्थिति में खाद्य प्रसंस्करण, चावल आधारित उत्पाद, टमाटर उत्पाद, परिधान, लकड़ी उत्पाद, कागज उत्पाद, शीत भंडारण, मशरूम प्रसंस्करण, बेकरी तथा मरम्मत सेवाओं जैसे अनेक नए सूक्ष्म एवं लघु उद्यम क्षेत्रों की संभावना भी बताई गई थी।आज इन पारंपरिक क्षेत्रों को ई-वाणिज्य, डिजिटल विपणन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आपूर्ति-श्रृंखला प्रौद्योगिकी और स्थानीय वितरण सेवाओं के साथ जोड़कर नए स्टार्टअप बनाए जा सकते हैं।

## अध्ययन के प्रमुख परिणाम

अध्ययन का पहला महत्वपूर्ण परिणाम यह है कि बिलासपुर में उद्यमिता के लिए आधारभूत आर्थिक और शैक्षणिक वातावरण मौजूद है। लगभग 16.28 लाख की जिला जनसंख्या, 35.81 प्रतिशत शहरी आबादी और 74.46 प्रतिशत साक्षरता स्थानीय मांग, श्रमशक्ति तथा संभावित युवा उद्यमी आधार का संकेत देती है।दूसरा परिणाम यह है कि बिलासपुर में उद्यमिता सहायता अब केवल जिला उद्योग केंद्र जैसे पारंपरिक माध्यमों तक सीमित नहीं है। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में स्थापित ऊष्मायन केंद्र और लगभग ₹4.69 करोड़ की निधि-समावेशी प्रौद्योगिकी व्यवसाय ऊष्मायन परियोजना ने आधुनिक स्टार्टअप सहायता का संस्थागत ढाँचा तैयार किया है।56 स्टार्टअप का ऊष्मायन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। तीसरा परिणाम यह है कि छत्तीसगढ़ में स्टार्टअप निर्माण की गति बढ़ी है।2020 के 155 नए मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की तुलना में 2024 में 460 स्टार्टअप मान्यता प्राप्त हुए। इससे युवाओं के लिए उद्यमिता की सामाजिक दृश्यता और अवसर दोनों बढ़ने की संभावना बनती है। चौथा परिमाण यह है कि सरकारी वित्तीय व्यवस्था अपेक्षाकृत व्यापक है। बीज सहायता, ₹100 करोड़ का पूंजी कोष, ₹50 करोड़ ऋण जोखिम कोष, ₹1 करोड़ तक प्रतिभूति-रहित ऋण, ब्याज सहायता, किराया सहायता और पेटेंट प्रतिपूर्ति जैसे प्रावधान आरंभिक उद्यमों की अनेक प्रमुख बाधाओं को संबोधित करते हैं।पाँचवाँ परिणाम यह है कि अवसरों की तुलना में पारिस्थितिकी अभी पूर्ण परिपक्व नहीं है। वर्तमान राज्य स्टार्टअप क्रमांकन में छत्तीसगढ़ को "उभरते स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र" में रखा गया है। वित्तपोषण, बाजार पहुँच, संस्थागत सहायता और अवसंरचना के प्रतिशतक अपेक्षाकृत निम्न हैं।

अंततः, बिलासपुर के युवाओं में वास्तविक जागरूकता का कोई नवीनसार्वजनिक प्रतिशत उपलब्ध नहीं होने के कारण यह दावा करना उचित नहीं होगा कि "इतने प्रतिशत युवा स्टार्टअप योजनाओं से परिचित हैं" उपलब्ध प्रमाण यह अवश्य दिखाते हैं कि जागरूकता उत्पन्न करने के संस्थागत माध्यम बढ़ रहे हैं पर उनकी पहुँच और प्रभाव का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण भविष्य में आवश्यक है।

## चर्चा (Discussion)

स्टार्टअप पारिस्थितिकी की सफलता केवल सरकारी योजना घोषित करने से नहीं होती। युवाओं को पहले यह समझना आवश्यक है कि व्यवसाय का अवसर कहाँ है, ग्राहक कौन है, प्रारंभिक पूंजी कैसे प्राप्त होगी, कंपनी का पंजीकरण कैसे होगा और असफलता के जोखिम का प्रबंधन किस प्रकार किया जाएगा।

बे और सहयोगियों का समेकित अध्ययन भी बताता है कि उद्यमिता शिक्षा और अभिप्राय में संबंध सकारात्मक है,लेकिन उसका प्रभाव स्वतः बहुत बड़ा नहीं होता। इसलिए बिलासपुर में महाविद्यालयों द्वारा केवल उद्यमिता विषय पढ़ाना पर्याप्त नहीं होगा। विद्यार्थियों को व्यवसाय योजना प्रतियोगिता, स्थानीय समस्या-आधारित नवाचार, वास्तविक ग्राहक परीक्षण, वित्तीय साक्षरता, कर व्यवस्था, डिजिटल विपणन, पेटेंट, निवेशक प्रस्तुति और उद्यमी मार्गदर्शन से जोड़ना आवश्यक है।

बिलासपुर की स्थानीय अर्थव्यवस्था इस दृष्टि से अनेक अवसर देती है। पुरानी औद्योगिक संरचना में मरम्मत एवं सेवाएँ,परिधान, लकड़ी, कृषि प्रसंस्करण और खनिज-संबंधी गतिविधियाँ प्रमुख रही हैं।इन क्षेत्रों का आधुनिक रूप कृषि-प्रौद्योगिकी, खाद्य ब्रांड, स्थानीय ई-वाणिज्य, औद्योगिक रखरखाव प्रौद्योगिकी, डिजिटल सेवा मंच, स्वास्थ्य-प्रौद्योगिकी, शिक्षा-प्रौद्योगिकी तथा हरित तकनीक के रूप में विकसित किया जा सकता है।

छत्तीसगढ़ की नई नीति भी वित्त-प्रौद्योगिकी, ई-वाणिज्य, यात्रा-प्रौद्योगिकी, शिक्षा-प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य-प्रौद्योगिकी, हरित प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अधिगम, वस्तु-अंतरजाल, विस्तारित वास्तविकता तथा बड़ी आँकड़ा प्रणालियों को उभरते क्षेत्रों में सम्मिलित करती है। इसका लाभ बिलासपुर के तकनीकी तथा वाणिज्य छात्रों को विशेष रूप से मिल सकता है।

फिर भी राज्य के वर्तमान क्रमांकन में वित्तपोषण अवसर और बाजार पहुँच अपेक्षाकृत कमजोर हैं। इसलिए विश्वविद्यालय,उद्योग,बैंक,निवेशक और सरकार के बीच स्थानीय स्तर पर नियमित संपर्क मंच आवश्यक है। ऊष्मायन के बाद स्टार्टअप को ग्राहक और अनुवर्ती पूंजी न मिले तो प्रारंभिक जागरूक्ता वास्तविक व्यवसाय में परिवर्तित नहीं हो पाएगी।

## परिकल्पना परीक्षण

### परिकल्पना–1 का परीक्षण

2020 में 155 तथा 2024 में 460 नए मान्यता प्राप्त स्टार्टअप, राज्य की नवीन वित्तीय नीति, बिलासपुर में 56 ऊष्मायित स्टार्टअप तथा राष्ट्रीय स्तर पर तीव्र स्टार्टअप विस्तार, इन सभी प्रमाणों से युवाओं के लिए अवसरों में स्पष्ट वृद्धि दिखाई देती है।अतः शून्य परिकल्पना–1 अस्वीकृत तथा वैकल्पिक परिकल्पना–1 समर्थित मानी जाती है।

### परिकल्पना–2 का परीक्षण

बिलासपुर में विश्वविद्यालय-आधारित ऊष्मायन, राज्य स्टार्टअप नीति और वित्तीय प्रोत्साहन युवाओं की जागरूकता बढ़ाने के लिए अनुकूल संस्थागत आधार प्रस्तुत करते हैं। किंतु जिले में युवाओं की प्रत्यक्ष जागरूकता का सर्वेक्षण उपलब्ध नहीं है अतः राज्य की संस्थागत सहायता, वित्त तथा बाजार पहुँच संबंधी प्रतिशतक अभी अपेक्षाकृत कम हैं। अतः वैकल्पिक परिकल्पना–2 आंशिक रूप से समर्थित है। इसे पूर्ण रूप से प्रमाणित करने के लिए बिलासपुर के18–35 आयु वर्ग पर प्राथमिक सर्वेक्षण आवश्यक होगा। यहाँ किसी काल्पनिक $p$-मान अथवा कृत्रिम सांख्यिकीय परीक्षण का प्रयोग नहीं किया गया है, क्योंकि व्यक्तिगत स्तर का प्राथमिक आँकड़ा उपलब्ध नहीं है।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि बिलासपुर में युवा उद्यमिता और स्टार्टअप के लिए परिस्थितियाँ पहले की तुलना में अधिक अनुकूल हुई हैं। भारत में तेजी से बढ़ता स्टार्टअप क्षेत्र छत्तीसगढ़ में बढ़ती स्टार्टअप मान्यताएँ, राज्य की 2025–30 नवाचार एवं स्टार्टअप प्रोत्साहन नीति तथा गुरु घासीदास विश्वविद्यालय का ऊष्मायन केंद्र मिलकर बिलासपुर को क्षेत्रीय उद्यमिता केंद्र के रूप में विकसित करने की क्षमता प्रदान करते हैं। विशेष रूप से वित्तीय सहायता की वर्तमान संरचना महत्वपूर्ण है। विचार से उत्पाद निर्माण, ऊष्मायन, प्रतिभूति-रहित ऋण, ब्याज अनुदान, किराया सहायता, स्थिर पूंजी निवेश, पेटेंट और रोजगार तक विभिन्न चरणों में सहायता उपलब्ध होने से युवाओं के सामने पहले से अधिक वास्तविक विकल्प मौजूद हैं।इसके बावजूद अवसर और जागरूकता समानार्थी नहीं हैं। योजना उपलब्ध होने का अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक छात्र या युवा उसके बारे में जानता है अथवा उसका लाभ उठाने मेंसक्षम है। इसलिए बिलासपुर के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में उद्यमिता परिचय कार्यक्रम, स्थानीय उद्यमी संवाद, व्यवसाय योजना प्रयोगशालाएँ, बैंक एवं निवेशक शिविर, पेटेंट मार्गदर्शन, डिजिटल विपणन प्रशिक्षण और ऊष्मायन-पूर्व कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाने चाहिए। विशेष ध्यान वाणिज्य विद्यार्थियों पर भी दिया जाना चाहिए। स्टार्टअप को केवल अभियांत्रिकी या प्रौद्योगिकी का विषय मानना उचित नहीं है। वित्त, लागत, लेखांकन, कराधान, विपणन, उपभोक्ता व्यवहार, ई-वाणिज्य और व्यवसाय प्रबंधन में दक्ष वाणिज्य विद्यार्थी सफल संस्थापक अथवा सह-संस्थापक बन सकते हैं।अंततः बिलासपुर में स्टार्टअप विकास की अगली अवस्था केवल अधिक स्टार्टअप पंजीकरण तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि ऐसी समग्र प्रक्रिया विकसित की जानी चाहिए जिसमें जागरूक युवाओं को सक्षम बनाकर उनके नवाचारपूर्ण विचारों का ऊष्मायन किया जाए, उन्हें आवश्यक वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाए और उन विचारों को टिकाऊ व्यवसायों में परिवर्तित किया जाए, ताकि स्थानीय स्तर पर नए रोजगार के अवसर उत्पन्न हो सकें। इस प्रकार युवा उद्यमिता बिलासपुर में स्वरोजगार को बढ़ावा देने, रोजगार-सृजन करने तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था में विविधता और स्थिरता लाने का एक प्रभावी माध्यम बन सकती है।

## संदर्भ सूची:

1) *Ajzen, I. (1991). The theory of planned behavior. Organizational Behavior and Human Decision Processes, 50(2), 179–211. doi:10.1016/0749-5978(91)90020-T.*

2) *Bae, T. J., Qian, S., Miao, C., & Fiet, J. O. (2014). The relationship between entrepreneurship education and entrepreneurial intentions: A meta-analytic review. Entrepreneurship Theory and Practice, 38(2), 217–254. doi:10.1111/etap.12095.*
3) *Chen, C. C., Greene, P. G., & Crick, A. (1998). Does entrepreneurial self-efficacy distinguish entrepreneurs from managers? Journal of Business Venturing, 13(4), 295–316. doi:10.1016/S0883-9026(97)00029-3.*
4) *Hassan, A., Saleem, I., Anwar, I., & Hussain, S. A. (2020). Entrepreneurial intention of Indian university students: The role of opportunity recognition and entrepreneurship education. Education + Training, 62(7/8), 843–861. doi:10.1108/ET-02-2020-0033.*
5) *Krueger, N. F., Jr., Reilly, M. D., & Carsrud, A. L. (2000). Competing models of entrepreneurial intentions. Journal of Business Venturing, 15(5–6), 411–432. doi:10.1016/S0883-9026(98)00033-0.*
6) *Liñán, F., & Chen, Y.-W. (2009). Development and cross-cultural application of a specific instrument to measure entrepreneurial intentions. Entrepreneurship Theory and Practice, 33(3), 593–617. doi:10.1111/j.1540-6520.2009.00318.x.*
7) *Nabi, G., Liñán, F., Fayolle, A., Krueger, N., & Walmsley, A. (2017). The impact of entrepreneurship education in higher education: A systematic review and research agenda. Academy of Management Learning & Education, 16(2), 277–299. doi:10.5465/amle.2015.0026.*
8) *von Graevenitz, G., Harhoff, D., & Weber, R. (2010). The effects of entrepreneurship education. Journal of Economic Behavior & Organization, 76(1), 90–112. doi:10.1016/j.jebo.2010.02.015.*
9) *Entrepreneurship Development Institute of India. (2025). Global Entrepreneurship Monitor: GEM India 2023–24 Report. EDII.*
10) *Department for Promotion of Industry and Internal Trade. (2016). Startup India: Action Plan. Government of India.*
11) *Department for Promotion of Industry and Internal Trade. (2026). States' Startup Ecosystem Ranking 5.0: Chhattisgarh State Report. Government of India.*
12) *Government of Chhattisgarh, Department of Commerce & Industries. (2025). Chhattisgarh Innovation and Startup Promotion Policy 2025–30.*
13) *Government of Chhattisgarh, Department of Commerce & Industries. (2024). Industrial Development Policy 2024–30.*
14) *Guru Ghasidas Vishwavidyalaya. (2025). Incubation Centre. Bilaspur, Chhattisgarh.*
15) *District Administration Bilaspur. (2026). Demography: Bilaspur District. Government of Chhattisgarh. Data based on Census 2011.*
16) *Development Commissioner, Ministry of Micro, Small & Medium Enterprises. (n.d.). Brief Industrial Profile of Bilaspur District. Government of India.*
17) *Ministry of Statistics and Programme Implementation. (2026). Annual Report, Periodic Labour Force Survey, 2025. Government of India.*
18) *NITI Aayog. (2022). India Innovation Index 2021. Government of India.*
19) *Press Information Bureau. (2024, July 26). State/UT-wise number of DPIIT recognised startups. Ministry of Commerce & Industry, Government of India.*
20) *Press Information Bureau. (2026, April 17). Government recognizes more than 55,200 startups during FY 2025–26; total recognized startups cross 2.23 lakh with over 23.36 lakh jobs created. Government of India.*
21) *Ministry of Micro, Small & Medium Enterprises. (2025). Annual Report 2024–25. Government of India.*